International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

राजकीय, अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन (शहरी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

सुरेन्द्र कुमार यादव
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय)
प्रयागराज (उ0प्र0)

Article Info
Volume 8, Issue 3
Page Number : 726-731

Publication Issue
May-June-2021

Article History
Accepted : 10 June 2021
Published : 18 June 2021

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन राजकीय, अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन (शहरी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में) किया गया है। अध्ययन वर्तमान समय से सम्बन्धित है अतः अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु प्रयागराज जनपद में स्थित राजकीय, अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के प्राप्त समस्त विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 2 राजकीय, 2 अशासकीय अनुदानित एवं 2 स्ववित्तपोषित विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि द्वारा किया गया है तत्पश्चात् प्रत्येक विद्यालयों से 50–50 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 टी0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेन्ट एण्ड मोटीवेशन का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–मान सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्षतः स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा सबसे अधिक, राजकीय विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उससे कम तथा अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा सबसे कम पायी गयी।

की–वर्ड – राजकीय, अशासकीय अनुदानित, स्ववित्तपोषित विद्यालय, विद्यार्थी, शैक्षिक अभिप्रेरणा

प्रस्तावना–

शिक्षा का कोई भी स्तर इससे अछूता नही है। क्योंकि शिक्षा मानव समाज की मूल आवश्यकता है, इसलिए इस व्यावसायिक दौड़ में बालक का समुचित विकास अति आवश्यक है। यह तभी संभव है। जब बालक को उचित पारिवारिक और शैक्षिक वातावरण मिले। विद्यालय का शैक्षिक वातावरण बालक के व्यक्तित्व विकास में

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

महती भूमिका निभाता है। माध्यमिक स्तर पर निजी क्षेत्र के और सरकार द्वारा पोषित विद्यालय बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं। अलग–अलग स्थानों पर इनके शैक्षिक वातावरण के बारे में लोगों के भिन्न–भिन्न मत हैं। ऐसे में निजी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों एवं सरकार द्वारा पोषित माध्यमिक विद्यालयों के साथ–साथ गैर सरकारी विद्यालयों की भी बाढ़ सी आ गयी है।

भारत में शिक्षा के निजीकरण से शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थाएँ शिक्षा की व्यवस्था करने में सरकार का सहयोग कर रही हैं, सरकारी अर्द्धसरकारी शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश दबाव को कम कर रही हैं और इच्छुक छात्र–छात्राओं को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध करा रही है। अपनी उत्तमकोटि की अधिसंरचना के कारण ये संस्थाएं अभिभावकों–विद्यार्थियों को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं और काम के बदले दाम के सिद्धान्त के तहत संचालित इन संस्थाओं के शिक्षक परिश्रम से पढ़ाते हैं, जिसमें इनका परीक्षाफल भी उत्तम रहता है। परिणामस्वरूप भारत में साक्षरता दर (2011 की जनगणना के अनुसार 73 प्रतिशत) बढ़ी है और सार्वभौमिक शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करना संभव प्रतीत होने लगा है। परन्तु शिक्षा के 'निजीकरण' का यह तो प्रकाश पक्ष है। इसका एक अंधकार पक्ष भी है। 'निजीकरण' का मूलमंत्र होता है– 'प्रतिस्पर्धा' अैर उसका मुख्य उद्देश्य होता है– 'मुनाफा'। स्ववित्तपोषित शिक्षा–संस्थाओं का पूरा ध्यान मुनाफा कमाने पर रहता है और मुख्य लक्ष्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना नेपथ्य में चला जाता है।

ऐसी शिक्षा संस्थाएं 'कैपिटेनशन फीस' (प्रत्येक विद्यार्थी से एक निर्धारित मात्रा में अनुदान) वसूल करती है और इनका वार्षिक शुल्क बहुत अधिक होता है। फलतः इनमें शिक्षा प्राप्त करना काफी महंगा सौदा हो जाता है और आर्थिक दृष्टि से कमजोर श्रेणी के व्यक्तियों के लिए लगभग असंभव हो जाता है। (इन संस्थाओं में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाना) कुछ स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थाएं तो बिना आवश्यक शर्तों को पूरा किए ही 'भेंट पूजा' (रिश्वत) के आधार पर मान्यता प्राप्त कर लेती हैं और इनसे निकलने वाले जिंदा उत्पादों की गुणवत्ता कैसी होगी– इसका अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता है। भ्रष्टाचार की नींव पर खड़ी ये शिक्षण संथाएं भ्रष्टाचार शिक्षित बेरोजगारी को बढ़ावा दे रही हैं। अधकचरी अव्यावहारिक, अनैतिक असमाजिक शिक्षा प्रदान करने की साधन इन निजी शिक्षण संस्थाओं ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था की 'रीढ़ की हड्डी' माध्यमिक शिक्षा व्यवस्था को तोड़कर रख दिया है और काहिल–जाहिल साक्षरों को उत्पन्न कर शिक्षित बेरोजगारी में दिन दुगनी रात चौगुनी वृद्धि कर रही हैं। इससे देश आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक रूप से खोखला होता जा रहा है।

मानव के प्रत्येक कार्य और व्यवहार के मूल में जन्मजात, स्वाभाविक और अर्जित प्रवृत्तियाँ छिपी होती हैं ये ही व्यवहार को प्रेरणा देती हैं इसलिए मनोवैज्ञानिकों ने इसे प्रेरणा या प्रेरक कहा है अतः हम कह सकते हैं कि मानव–व्यवहार के मूल में प्रेरक प्रवृत्तियाँ विद्यमान रहती है जिससे प्रेरित होकर व्यक्ति कार्य करता है जिस व्यक्ति में उपलब्धि अभिप्रेरक ज्यादा पाया जाता है वह उच्चतर सफलता प्राप्त करते हैं।

लावेल के अनुसार – ''अभिप्रेरणा एक ऐसी मनोवैज्ञानिक या आन्तरिक प्रक्रिया है जो किसी आवश्यकता की उपस्थिति में उत्पन्न होती है। यह ऐसी क्रिया की ओर गतिशील होती है जो उस आवश्यकता को सन्तुष्ट करेगी।''

शैक्षिक अभिप्रेरणा में द्वितीयक भूमिका विद्यालय का होता है उसमें पढ़ाने वाले शिक्षक, साथ में पढ़ने वाले विद्यार्थी, विद्यालय के वातावरण, उपलब्ध संसाधन, पाठ्यक्रम, खेल–कूद, पाठ्य–सहगामी क्रियाएँ आदि विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। पूर्व अध्ययनों में **तिवारी, प्रकाश नारायण (2014)** ने अध्ययन में पाया कि उच्च संस्थागत वातावरण एवं निम्न संस्थागत वातावरण समूह में एकल बालक विद्यालयों की उपलब्धि अभिप्रेरणा के मध्य अन्तर सार्थक पाया गया। **महावर एवं पारीक (2018)** ने अध्ययन में पाया कि गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिप्रेरित व्यवहार सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

अतः वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यालयों के प्रकार के आधार पर अध्ययनकर्त्ता ने विद्यार्थियों के उपलब्धि अभिप्रेरणा के अन्तर को देखने का प्रयास किया है।

अध्ययन का शीर्षक–

राजकीय, अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का अध्ययन (शहरी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

- राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का विश्लेषण किया गया है–

- राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि–

अध्ययन वर्तमान समय से सम्बन्धित है अतः अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन को सम्पादित करने हेतु प्रयागराज जनपद में स्थित राजकीय, अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के प्राप्त समस्त विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में कुल 2 राजकीय, 2 अशासकीय अनुदानित एवं 2 स्ववित्तपोषित विद्यालयों का चयन लॉटरी विधि द्वारा किया गया है तत्पश्चात् प्रत्येक विद्यालयों से 50–50 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। उपकरण के रूप में डॉ0 टी0 आर0 शर्मा द्वारा निर्मित 'एकेडमिक एचीवमेन्ट एण्ड मोटीवेशन का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु टी–मान सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

H_{01} राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 1

राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्य क्रान्तिक–अनुपात का अन्तर

क्र0 सं0	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक–अनुपात
1.	राजकीय	100	25.20	4.71	3.76*
2.	अशासकीय अनुदानित	100	22.98	3.60	

*0.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्या –

तालिका 1 में राजकीय विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का मान 25.20 एवं 4.71 तथा अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का मान 22.98 एवं 3.60 है। राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों के बीच क्रान्तिक–अनुपात का परिगणित मान 3.76 है जो 't' तालिका में मुक्तांश (df) = 198 पर रखने पर t का मान 0.01 स्तर पर 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। अतः राजकीय विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

2. राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

H_{02} राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 2

राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्य क्रान्तिक–अनुपात का अन्तर

क्र0 सं0	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक–अनुपात
1.	राजकीय	100	25.20	4.71	3.46*
2.	स्ववित्तपोषित	100	27.52	4.83	

*0.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्या –

तालिका 2 में राजकीय विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का मान 25.20 एवं 4.71 तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का मान 27.52 एवं 4.83 है। राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों के बीच क्रान्तिक–अनुपात का परिगणित मान 3.46 है जो 't' तालिका में मुक्तांश (df) = 198 पर रखने पर t का मान 0.01 स्तर पर 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। अतः

स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा राजकीय विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

3. अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन

H_{03} अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका 3

अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्य क्रान्तिक–अनुपात का अन्तर

क्र0 सं0	विद्यालय के प्रकार	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक–अनुपात
1.	अशासकीय अनुदानित	100	22.98	3.60	7.57*
2.	स्ववित्तपोषित	100	27.52	4.83	

*0.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्या –

तालिका 3 में अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का मान 22.98 एवं 3.60 तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमान एवं मानक विचलन का मान 27.52 एवं 4.83 है। अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा के मध्यमानों के बीच क्रान्तिक–अनुपात का परिगणित मान 7.57 है जो 't' तालिका में मुक्तांश (df) = 198 पर रखने पर t का मान 0.01 स्तर पर 2.60 से अधिक है जो सार्थक है। अतः स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

निष्कर्ष–

अध्ययन के निष्कर्ष में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- राजकीय एवं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है।
- राजकीय एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है।
- अशासकीय अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में अन्तर है।

निष्कर्षतः स्ववित्तपोषित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा सबसे अधिक, राजकीय विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उससे कम तथा अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा सबसे कम पायी गयी। समान अध्ययन **ठाकुर, मुरलीधर (2018)** ने अध्ययन में इंगित किया कि अध्यापको को कार्य से पूरी तरह जोड़े रखने के लिए अभिप्रेरणा मुख्य कारक हो सकती है। अभिप्ररेणा अध्यापक के विशिष्ट लक्ष्य के प्रति व्यवहार को दिशा प्रदान करती है तथा उसे और अधिक ऊर्जा शक्ति एवं प्रयास के साथ कार्य करने के लिए अभिप्रेरित करती है। यह शैक्षिक गतिविधियों में अध्यापक की सहभागिता बढ़ाने बनाये रखने संज्ञानात्मक संसाधन बढ़ाने किस तरह की निष्पत्तियों अभिप्रेरक है, इसका निर्धारण करने एवं बेहतर कार्य निष्पादन के लिए नेतृत्व प्रदान करती है। **महावर एवं पारीक (2018)**

ने अध्ययन में पाया कि गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिप्रेरित व्यवहार सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर कहा जा सकता है वर्तमान में जहाँ स्ववित्तपोषित विद्यालयों की संख्या में वृद्धि हुई है वहीं स्ववित्तपोषित विद्यालयों में बच्चों की संख्या में वृद्धि के साथ–साथ उच्च फीस प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा में वृद्धि हेतु संसाधनों की उपलब्धता, नये नवाचारों का प्रयोग, शिक्षकों को विशेष निर्देश प्राप्त होना कि विद्यार्थियों को अभिप्रेरित कर उनके उपलब्धि में वृद्धि कराया जाय तथा कक्षा कार्यों के साथ–साथ गृह कार्यों एवं प्रोजेक्ट कार्यों को कराया जाना इत्यादि हो सकता है। वहीं अशासकीय अनुदानित विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान न दिया जाना केवल पाठ्यक्रम को पूर्ण कराया जाना इत्यादि कारक उनके उपलब्धि अभिप्रेरणा का निम्न होना का कारण हो सकता है साथ ही साथ अशासकीय अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण अभिभावकों का अपने व्यवसाय में जुड़े होने के कारण बच्चों पर विशेष ध्यान न दिया जाना भी एक कारक हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

- कुमार, सुभाष (2009). उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अधिगम की समस्याओं में शैक्षिक अभिप्रेरणा का उनकी अध्ययन आदत, समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध में अध्ययन, शोध–प्रबन्ध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
- ठाकुर, मरलीधर (2018). अध्यापको की कार्यशैली : अध्यापक अभिप्रेरण एवं अध्यापन शैली के लिए निहितार्थ, *शोध समागम, ए मल्टीडिस्पिलनरी एण्ड मल्टीलिंगुल रिसर्च जर्नल*, पृ0 94–103
- तिवारी, प्रकाश नारायण (2014). एकल एवं सहशिक्षा विद्यालयों के संस्थागत वातावरण का उनके विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा के सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन, पी.एच–डी. शोध प्रबन्ध, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
- महावर, ज्योति एवं पारीक, अलका (2018). शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, *इन्सपीरा–जर्नल ऑफ मार्डन मैनेजमेण्ट एण्ड इण्टरप्रीन्यूरशिप*, वॉल्यूम–08, नं0 04, पृ0 552–554
- शर्मा, ममता (2014). ए स्टडी ऑफ ऐकेडमी मोटिवेशन ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू देयर स्टडी हैबिट, सेल्फ–कन्सेप्ट एण्ड इमोशनल इन्टेलिजेन्श, पी.एच–डी. थिसिस, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
- शर्मा, अवधेश कुमार (2008). पब्लिक स्कूल एवं सरस्वती विद्या मन्दिर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं उच्च मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।